International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 748-749

वास्तु का अर्थ एवं हडप्पा का वास्तु शास्त्रीय अवलोकन

प्रीति[1], डॉ० प्रभात कुमार[2]

[1] शोधार्थीनी, प्रा० भा० इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत।

[2] प्रोफेसर, प्रा०भा० इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

वास्तु का अर्थ

वास्तु शब्द की उत्पत्ति की 'वस' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'बसना' अर्थात् 'निवास करना'। ''वसन्ति प्राणिनी यत्र'' अर्थात् प्राणियों के वास-स्था को वास्तु कहा जाता है। इस दृष्टि से प्राणी जहां रहता है उसके लिए वही वास्तु है। जलचर जल में रहते है, उनके लिए जल ही वास्तु है। पक्षी अपने नीड में रहते है, अतः उनके लिए नीड ही उनका वास्तु है परन्तु अमरकोष में गृह के लिए नियत भूमि को 'वास्तु' कहा गया है। शब्दार्थभानु, पद्मचन्द्रकोश, शब्दस्तनोममहान्धि और शब्दार्थ चिन्तामणि आदि कोष ग्रंथों में भी वास्तु शब्द का अर्थ 'वास योग्य भूमि' अथवा 'गृह करण योग्य भूमि' गृहीत है। ऋग्वेद में वास्तु शब्द प्रयोग 'भवन' अथवा 'गृह' के लिए हुआ है। इस प्रकार सामान्यतया निवास योग्य भूमि की संज्ञा वास्तु है और वास्तु अर्थात् भवन से सम्बन्धित शास्त्र को वास्तुशास्त्र कहा जाता है। भारतीय परम्परा में वास्तुशास्त्र अर्थात निर्माण अभियांत्रिकी को ऋषियों तथा मनीषियों के आद्वितीय ज्ञान-कोष से उद्भूत माना गया है।

साधारण एवं समिति अर्थ में वास्तु शब्द का अर्थात निवास योग्य भूमि अथवा भवन है परन्तु वास्तुशास्त्रीय ग्रंथों में वास्तु का अभिप्राय व्यापक है। आचार्य विश्वकर्मा ने जहां पर देव, मनुष्य तथा गज, गाय और अश्वादि पशु निवास करते है उसे वास्तु कहा गया है। इसके अतिरिक्त भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली वस्तुओं तथा मानव जिन वस्तुओं की वास्तु संज्ञा है। इसी प्रकार मानसार और मयमत में वास्तुशास्त्र विषयक भूमि हर्म्य या प्रासाद, यान तथा पर्यंक या शयन का श्रृंखलाबद्ध संकीर्तन हुआ है। इन ग्रन्थों में उपर्युक्त वस्तुओं के निर्माण मूलतः जिन वस्तुओं को वास्तु की संज्ञा देते हुए 'भूमि' को ही मुख्य वास्तु बताया गया है, क्योंकि इन वस्तुओं का निर्माण मूलतः जिन वस्तुओं से होता है उनका उत्पत्ति स्थान भूमि ही है। दूसरे शब्दों में इन सभी वस्तुओं का आधार 'धरा' है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर वास्तु शब्द की उत्पत्ति 'वास्तु' से भी स्वीकार्य है और जब कोई भी निर्माण द्रव्य इष्टिका, काष्ठ आदि जब तक अभिनव निर्मित में परिणत होते है तो वे ही वास्तु संज्ञा से व्यवहारित होते है।

विस्तृत अर्थ से तात्पर्य केवल साधारण मानव के रहने योग्य भवन ही नही, अपितु राजभवन, प्रासाद, ग्राम, रथ्या, मार्ग, प्रकार, पारिखा, मंदिर देवालय, मण्डप, यज्ञ-वेदी, सभागृह, कूप, तालाब, वापी, स्तूप, आदि उन सभी निर्माणों से है, जो मानव के रहने, उपयोग करने एवं उसके अभिष्टज्नों तथा देवों के निवास स्थान आदि के रूप में है। अतः वास्तु का अर्थ केवल गृह न होकर 'गृह आदि' हो गया है। तदनानुसार वास्तुशास्त्र का प्रतिपाद्य विषय मानव गृहों, प्राकार, परिखाओं देव मंदिरों मण्डपों, बान्धों, सेतुओं एवं तडागों अर्थात् प्रत्येक प्रकार के भवन, क्षेत्र कूप, तालाब, वापी, पारिखा आदि की रचना के उपायों तथा साधनों की व्याख्या करना है। मानसार, मयमत आदि रमरांगणसूत्रधार में पुर, निवास, सभा, रेशम तथा आसन आदि के अतिरिक्त देश के वर्णन से इस शास्त्र का विषय आगे बढ जाता है। इस ग्रंथ के वास्तुशास्त्र विषय वर्ग नाम अध्याय के महासभा (पृथ्वी) का आगमन, सौर मण्डल की गतिविधि, सम्पूर्ण पृथ्वी का निवेशोपक्रम वसति-योग्यता, वास स्थान जनपद-निवेश और सृष्टि विभाग एवं भूगोलादि का वर्णन हुआ है। समरांगणसूत्रधार जैसे विशुद्ध परिमार्जित एवं परिष्कृत वास्तुशास्त्रीय ग्रंथ में महासभा का आगमन महदादिसर्ग (सृष्टि-वर्णन) और भुवन कोश (भूगोल-वर्णन) विश्व-योजना की ओर संकेत करते है। इस प्रकार भारतीय वास्तु शास्त्र का विषय साधारण या विशिष्ट भवनों, प्रासादों ग्राम खेटकों पत्तनों, पुटभेदनों एवं पुरो तक ही सीमित न रहकर जनपद, जनपद समूह, राष्ट्र समूह भूमण्डल तक विस्तृत हो गया है। जब समस्त भूमण्डल और सौरमण्डल वास्तु का विषय है तो वास्तु की व्याख्या में वास्तु को भवन निर्माण की कोठरी में बंद कर देना बडा अभिशाप है।

हडप्पा उत्तम नगर विन्यास का उदाहरण है। डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल के अनुसार इनकी भूमिस्थ रूप-रेखा में प्रायः समानता है। हडप्पा सभ्यता का निर्माण पहले ही सोची-समझी और अभ्यरस्त योजना प्रणाली पर हुआ था। भारतीय स्थापत्य के समान आदर्शो और सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित इसका सिन्नवेश लगभग तीन मील के घेरे में हुआ था। पुर सन्निवेश की यह उर्ध्वाधर योजना भारतीय वास्तु विद्याचार्यो की मौलिक देन है। दुर्ग परिवेष्टि भाग में सम्भवतः राजकीय या शासनिक सत्ता के विशिष्ट भवन और अधिकान गण के आवासीय भवन थे। आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार वास्तु विद्याचार्यो ने इसका विन्यास दुर्ग के रूप में किया था, जिनमें पारिख प्राकार, वप्र, द्वार, अट्टालक, महापथ, प्रासाद, कोष्ठागार, सभा, चत्वर, वीथी, जलाशय आदि वास्तु के विभिन्न अंग प्राप्त हुए है। हडप्पा नगर रावी के तट पर बसा हुआ था। वर्तमान में यहां एक विशाल ग्राम बसा हुआ है। इसके भग्नावेशेषों में प्राप्त ईंटों को स्थानीय नागरिकों द्वारा स्वीकार्य कार्य हेतु स्थानान्तरित कर देने के कारण दुर्गस्थ भवनों का कोई उचित

स्वरूप सामने नही आया परन्तु उत्खनन से ज्ञात हुआ है कि यहां के भवनों का निर्माण योजनाबद्ध विधि से हुआ था। स्थापत्य कला की दृष्टि से दुर्ग और रक्षा प्राचीर के अतिरिक्त श्रामिक निवास गृहों, चबुतरों और धान्यशाला का विशेष महत्व है।

हडप्पा नगर दो भागों में विभक्त था, जिनमें एक भाग दुर्ग से घिरा हुआ था दूसरा भाग दुर्गरहित था। दुर्ग वाला आकार में समान्तर चतुभुर्ज था। इसकी लम्बाई उत्तर से दक्षिण की ओर ४६० गज तथा चौडाई पूर्व से पश्चिम की ओर २१४ गज थी। दुर्ग का निर्माण एक चबुतरे पर किया गया था जो धरातल से २० फुट से २५ फुट ऊंचा था। केदारनाथ शास्त्री के अनुसार प्राकार की नींव के नीचे नदी पंड के भराव से स्पष्ट है कि बाढ का पानी उच्छाय रेखा ४६० तक आ जाता था। अतः प्रारम्भिक काल में इसका निर्माण बाढ में पानी से सुरक्षित रहने के उद्देश्य से किया गया था। उसके भीतर राजकीय भवन, कर्मचारियों के आवास तथा श्रामिकों के गृह बने हुए थे। चौडे राजमार्ग सुव्यवस्थित योजना के अनुसार निर्मित थे तथा देखने में भव्य लगते थे।

रक्षा-प्राकार

भित्ती (प्राकार) में यथा -स्थान अट्टालकों और गोपुरों का निर्माण किया गया था सुरक्षा भित्ती के दक्षिणी सिरे पर दुर्ग तक चढने के उद्देश्य से सीढियों का भी निर्माण किया गया था जिससे यह विदित होता है कि प्राचीन हडप्पा सीढियों की निर्माण विधि और उसकी उपयोगिता से परिचित थे।

श्रामिक आवास/गृह-प्रथम के भवन

समूह के समीप में ही दक्षिण की ओर दो भिन्न-भिन्न पंक्तियों में कतिपय छोटे-छोटे गृहों का निर्माण किया गया थ, जिनकी पहचान पुरातत्वविदों ने श्रामिक के गृहों के रूप में की है। इसमें उत्तर की पंक्ति में सात तथा दक्षिण की पंक्ति में आठ गृह निर्मित थे। इन श्रामिक गृहों की एकरूपता से ज्ञात होता है कि इनका निर्माण एक विशेष योजना के अन्तर्गत किया गया था। जोकि तत्कालीन राजकीय निर्माण को सूचित करते है। प्रत्येक घर तीन-चार फीट गली द्वारा विभक्त थे, और इनमें दो या तीन कमरें तथा आंगन भी था। प्रत्येक घर की फर्श पर पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया था। दीवरों पर चिनाई भी मिट्टी का गारा प्रयुक्त था परन्तु फर्श की ईंटों को जोडने के लिए जिप्सम का प्रयोग किया गया था। हडप्पा के उत्खनन में कतिपय कुओं के अवशेष भी प्राप्त हुए है, जिनकी चिनाई अत्यन्त दृढता से की गई थी। इनका उपयोग केवल पीने के पानी प्राप्त करने के लिए किया जाता था। अन्य कार्यो के लिए पानी रावी नदी से लिया जाता था।

चबूतरे

हडप्पा के पूर्वोक्त श्रामिक गृहों के उत्तर में द्वितीय वर्ग के निर्माण थे, जिनकी पहचान चबूतरों के रूप में की गई है। इनकी संख्या १८ है तथा लगभग १० फुट की गोलाई में है। इनका निर्माण सुदृढ ईंटों से किया गया था। चबूतरों के मध्य भाग में गोलाकार गढ्ढा छोड दिया गया था जिनमें काष्ठ निर्मित ओखली स्थापित की गयी थी। उत्खनन में इनमें गेंहूं, जौ आदि आनाज के अतिरिक्त संकेत मिले है। जिससे ज्ञात होता है कि इन चबूतरों का निर्माण आनाज कूटने के उद्देश्य से किया गया था। यह कार्य समीप में ही स्थित गृहों में रहने वाली राजकीय श्रामिक करते थे।

धान्यशाला

चबूतरों के उत्तर की ओर लगभग ११०० गज की दूरी पर धान्यशाला का निर्माण किया गया था। यह १६१ फीट लम्बा तथा १३५ फीट चौडा विशालकाय भवन था। यह भवन दो पंक्तियों में विभक्त था, जिसकी दोनों पंक्तियों में छः-छः प्रकोष्ठ थे। इनकी लम्बाई चौडाई ४००० व २० फीट थी और मध्य में २३ फीट चौडा रास्ता था। सिन्धु सभ्यता के युग में धान्यशालाओं का अत्यन्त स्थान था, क्योंकि मुद्रा विहिन युग होने के कारण तत्कालीन आर्थिक जीवन का आधार वस्तु विनिमय थी। धान्यशालाओं राजकीय कोष के अन्तर्गत आती थी, जिनके द्वारा विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति की जाती थी।

किसी भवन या नगर नियोजन के निर्माण के लिए उपयुक्त भूमि की आवश्यकता होती है। भूमि का चयन जीविका उपार्जक के आवश्यक मूलभूत संसाधनों की प्राप्ति के आधार पर किया जाता है। स्थान और वातावरण, जलवायु आदि के अनुसार भूमि का चयन करके प्राचीन भारतीय नगरों को एक उत्तम एवं व्यवस्थित नगर योजना के आधार पर बसाया गया था। हडप्पा की नगर योजना वास्तु शास्त्रीय विधि पर आधारित थी। हडप्पा का दुर्ग, दुर्ग प्राचीर, चबूतरों की ऊंचाई पर निर्माण, श्रामिक-आवास की अलग व्यवस्था धान्यशाला, सडके, भवनों का हवादार होना, नालियों का उचित प्रबंध एक सुव्यस्थित वास्तु कला के उदाहरण है।

संदर्भ

1. हिन्दी विश्वकोष खण्ड २१ पृ० २३६
2. शब्द कल्पदुम, भाग-४, पृ० २५८
3. वेश्मभूर्वास्तुत्रियाम-अमरकोष, काण्ड-२ पुरवर्ग-१६
4. पद्मचन्द्रकोश, पृ० १०२३
5. विश्वकर्म वास्तुशास्त्र, पृ० ७, ७.१
6. शब्दार्थ चिन्तामणिकोष पृ० २६५
7. मानसार अध्याय ३.१, ३.२
8. मयमत अध्याय २.१, २.२, २.३
9. समरांगणसूत्रधार अध्याय १.४-५ तक
10. प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन पृ० २, ४, १५
11. सिन्धु सभ्यता का आदि केन्द्र 'हडप्पा' पृ० १६८, १७१
12. प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, पृ० ११, १३
13. भारतीय वास्तुकला का इतिहास पृ० १५
14. भारतीय वास्तुशास्त्र का कालक्रमिक इतिहास, पृ० ३, ४, ५, ५३